

“मैं तो धणी ने दुध हारु वाड़ा में  
मुंडू घाल्यु मारु पेट भरवा ने”



# सैकड़ों कदमों ने किया स्वराज आग्रह

## स्वराज संदेश-संवाद पदयात्रा

आचार्य विनोबा भावे की जन्म जयंति (दिनांक 11 सितम्बर 2022) से महात्मा गाँधी जयंती (दिनांक 02 अक्टूबर 2022) तक

: स्वराजियों का यात्रा अनुभव :

यात्रा मार्ग: स्वराज संदेश सवांद यात्रा मार्ग बाँसवाड़ा से जयपुर के लिए पहुँची इस दौरान यात्रा करते हुए निम्न मार्गों से चलते हुए

बाँसवाड़ा - घाटोल - पीपलखूंट - छोटी सादड़ी - निम्बाहेड़ा - चित्तौड़गढ़ - भीलवाड़ा - बनेड़ा - शाहपुरा - केकड़ी - मालपुरा - चौसला - फागी - रेनवाल - सांगानेर - जयपुर तक पहुँच कर अपने अपने अनुभव “वाते वाग्धारा नी” में साझा किए :



प्यारे किसान भाइयों-बहनों, स्वराज साथी व  
प्यारे बच्चों जय गुरु !!!

दीपावली के शुभ अवसर पर किसान भाई – बहनों, स्वराज साथी सभी को बहुत सारी शुभकामनायें और आने वाली अगली फसल सभी के लिए खुशियों की सीगात लेकर आये।

मैं हर किसान से आग्रह करना चाहूँगा कि हमारे परम्परागत तरीके जो हमारे पूर्वज अपनाते थे उन्हें आज के परिपेक्ष में हम तकनीकी से दूर जाने का नहीं कह रहे हैं जो हमारे परम्परागत तरीके थे उनका महत्व समझे और आने वाली पीढ़ियों तक संरक्षित रख कर आगे ले जाये किसान के बिना दीपावली नहीं है और किसान से ही दीपावली है अपने आप में वो अन्न दाता है जिस रोज किसान अपना काम करना छोड़ देगा उस रोज से सारी दीपावलीयां सुनी हैं, देश दुनिया का पहला “ दीपक” अन्नदाता होता है क्योंकि उससे ही हमारी “ली” जलती है, चूल्हे जलते हैं और उससे ही खुशियाँ जगमग होती हैं बाहर दिखने वाले दीपक से ज्यादा जो पेट हमारी आते हमारे भोजन में दीपक वो ही जलाते हैं।

मैं दीपावली और इस स्वराज संदेश यात्रा के विषय में आप लोगों से बात करने से खुद को नहीं रोक पा रहा हूँ स्वराज संदेश यात्रा हमारा वह अनुभव था जो वर्षों से वाग्धारा ने क्षेत्र में समुदाय के साथ किए हुए कामों को एक सामूहिक समझ बनाकर दूसरे समुदाय में लेकर के जाना था और यह यात्रा समस्त पदाधिकारी, सहजकर्ता, स्वराज मित्रों और साथियों के अनुभव साझा करते हुए किस प्रकार से मुकाम पर पहुँची उसके वर्णन शायद शब्दों में नहीं बताए जा सकते और अनुभव भी शब्दों में नहीं बताए जा सकते और मैं प्रति माह की भाँति जो आपसे चर्चा करता हूँ उसमें से बता करके इसे कमजोर करना नहीं चाहूँगा मैं आग्रह करना चाहूँगा हर स्वराज सहजकर्ता, हर स्वराज मित्र से की संगठन के जो पदाधिकारी आए उनके माध्यम से और जो नहीं आ पाए उन तक हमारी यात्रा के अनुभव को पूछा है यात्रा का मूल उद्देश्य जिस प्रकार से था की हम हमारी आदिवासी जीवन शैली स्वराज की जीवन शैली है किस प्रकार से हम हमारे जल, जंगल, जमीन, जानवर, बीज और आने वाली पीढ़ियों के लिए संस्कृति को बचा के रखना चाहते हैं उसको दूसरे क्षेत्र में दूसरे समुदाय तक पहुँचाने के लिए ये प्रयास था और जो काफी हद तक सैकड़ों बैठकों के साथ ही मुख्यमंत्री व राज्यपाल से मिलकर एक प्रयास किया कुछ हद तक प्रयास सफल भी हुआ होगा ऐसी आशा है।

परन्तु इस अवसर पर मैं यह जरूर कहना चाहूँगा कि स्वराज यात्रा किसी 10 दिन, 15 दिन या 200-500 हजार किलोमीटर की यात्रा नहीं है यह जीवन यात्रा है जो की आपने हमारे समाज ने, कृषक समाज ने, आदिवासी समाज ने जी है और हमारे आदिवासी क्षेत्र में अहिंसक कृषि वर्षों से उदाहरण रही है जिससे प्रकृति को बचाया है बच्चों को अपनी भावनाएं प्रकट करने की हमारी संस्कृति ने हमारी पीढ़ियों को खुशियाँ दी है तथा सीमित संसाधनों के साथ हमारी जीवन शैली ने हमें खुशी जीवन दिया है यह वही यात्रा है स्वराज जीवन शैली केवल मात्र समाज को बताने के लिए नहीं अपितु हमारी खुद की खुशहाली के लिए भी है यह हमारी इस यात्रा कि सीख है मैं हर उस यात्री से जो इस यात्रा में सम्मिलित नहीं हो पाए परन्तु स्वराज के उदहारण है जिनकी चर्चा इस स्वराज में की है उन सभी को धन्यवाद देना चाहूँगा मैं स्वयं तथा वाग्धारा संस्था हमारे संगठन के साथी सदैव उन सभी स्वराजियों के ऋणी है जो इस आयाम को मजबूत करने के लिए प्रयासरत हैं।

इसी के साथ मैं हमारे बड़े त्यौहार दीपावली की शुभकामनाएं देता हुआ आपसे आग्रह करूँगा की दीपावली के तुरंत बाद हमारी बुवाई का समय आ जायेगा समय पर बुवाई, सही बुवाई, सही फसल के चुनाव के साथ बुवाई, सही बीज की बुवाई, हमारे अपने लिए खेती के लिए बुवाई, हमारे भोजन के लिए बुवाई तथा जो बीज खोता जा रहा है उसे ढूँढ के लाकर के उसे संरक्षित करने के लिए उसे पुनः बढ़ाने के लिए खेती और उसकी बुवाई बहुत महत्वपूर्ण है इन विषयों को ध्यान में रखकर समय प्रबंधन के साथ हम बुवाई करे जिन बातों को हम हमारी सच्ची खेती में कहते हैं बीज, खराब बीज की बुवाई ना हो जाए बीज को पहले सफाई के साथ उसका ट्रीटमेंट ( उपचार ) कर उसकी बुवाई हो तथा उचित दूरी का ध्यान रखते हुए बुवाई हो यह हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है आगामी फसल के लिए भी मैं आपको शुभकामनाएं देना चाहता हूँ और एक आग्रह और करना चाहता हूँ कि हम विशेष रुप से ध्यान में रखें जो कि हमारे क्षेत्र में पिछले 8- 10 सालों से होता आ रहा है हमारे पोषक पदार्थों को खरपतवार मान रहे हैं जैसे चिल की भाजी और भी कई भाजीया है उसे हम दवाई के माध्यम से नष्ट करते हैं वह ना करें उसे स्वयं भोजन में सम्मिलित करें मवेशियों के भोजन में सम्मिलित करें हम केवल मात्र उस वनस्पति को नहीं मार रहे हैं हम हमारी पीढ़ियों को नुकसान पहुंचा रहे हैं इसका ध्यान रखें।

जय गुरु

आपका अपना  
जयेश जोशी



बाँसवाड़ा से जयपुर के बीच स्थानीय समुदाय द्वारा जगह जगह पर अल्पाहार, फल -फूल माला व साफा बंधवाकर स्वराजियों का स्वागत किया गया।

## यात्रा के दौरान सवांद

स्वराज संदेश सवांद यात्रा के प्रारंभ 11 सितम्बर से लेकर 2 अक्टूबर तक पहले सर्वधर्म प्रार्थना सभा, प्रभात फेरी, स्थानीय समुदाय, शिक्षक, बालक -बालिकाएं, वार्ड पंच, सरपंच, नगर पालिका अध्यक्ष, पार्षदगण, गांधीदर्शन समिति के सदस्य, समाजसेवी, नागरिक मंच व मंत्री महोदय के साथ ही माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत व राज्यपाल कल राज मिश्र व गणमान्य लोगों से सवांद स्थापित किया गया।

| क्र. स. | प्रतिनिधि               | संख्या |
|---------|-------------------------|--------|
| 1       | वार्ड पंच               | 37     |
| 2       | सरपंच / पूर्व सरपंच     | 24     |
| 3       | विधायक                  | 1      |
| 4       | विधायक प्रतिनिधि        | 4      |
| 5       | पार्षद गण               | 27     |
| 6       | नगर पालिका अध्यक्ष      | 02     |
| 7       | शिक्षक                  | 26     |
| 8       | प्रधानाचार्य            | 7      |
| 9       | गांधी दर्शन समिति सदस्य | 24     |

| क्र. स. | प्रतिनिधि                        | संख्या      |
|---------|----------------------------------|-------------|
| 10      | मंत्री महोदय                     | 3           |
| 11      | मुख्यमंत्री महोदय राजस्थान सरकार | 1           |
| 12      | राज्यपाल राजस्थान                | 1           |
| 13      | बैठको में ग्रामीणों से सवांद     | 6924        |
| 14      | नागरिक मंच व संगठन               | 23          |
| 15      | बच्चों के साथ सवांद              | 854         |
| 16      | पुलिस प्रशासन                    | 7 जिलों में |
| 17      | संस्था पदाधिकारियों के साथ बैठके | 21          |
| 18      | राज्य बाल आयोग सदस्य             | 2           |



## स्वराजियों द्वारा अपने अनुभव साझा करते हुए :

हमारी स्वराज संदेश सवांद यात्रा पहले दिन कुपड़ा से 11 सितम्बर 22 को रवाना हुई तो गर्मी ने अपने तेवर दिखाने शुरू किये , लेकिन भगवान् ने सभी यात्रियों को गर्मी से राहत प्रदान करते हुए सभी स्वराजियों का हल्की हल्की बरसात कर अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

प्रभु लाल गरसिया  
आनन्दपुरी



“ मैंने आज तक इस प्रकार पैदल यात्रा के बारे में सोचा नहीं था। परन्तु समाज के उत्थान के लिए स्वराज जरूरी है इसलिए मैंने संकल्प लेकर परिवार वालों को समझा कर यात्रा में सम्मिलित हुई। इस दौरान मुझे एक जिले से दूसरे जिले की परम्पराओं, प्राकृतिक संसाधनों और विचारों को समझने व सुनने का अवसर मिला। यह मेरे लिए भविष्य में बहुत ही लाभदायक होगा।

श्रीमती सोना ताबियार



“ आपने स्वराज संदेश सवांद पदयात्रा की एक नई शुरुआत कि है यदि हम हमारे जीवन में थोड़ा भी गांधी जी के आदर्श और स्वराज की भावना को अपना ले तो हमारा जीवन धन्य हो जायेगा। ”

पिंकेश पटवा  
जिला परिषद सदस्य  
प्रतापगढ़



“स्वराज के संकल्पों को लेकर राज्य सरकार के पास सवांद के लिय यात्रा जा रही है मुझे पूर्ण आशा है कि राज्य सरकार धरातल पर स्वराज के कार्यों को किर्यान्वित करेगी।”

अंकित सामरिया  
तहसीलदार पीपलखूंट,



## स्वराज संदेश सवांद यात्रा को लेकर शुभकामनाये देते हुए कहा कि

हम अपने विचारों को ,अपनी मांगों को नीतिनिर्माताओं के साथ मिलकर साझा करेंगे और मैं यथासम्भव पदयात्रा में सहायता करता रहूँगा।

श्री उदयलाल जी  
सरपंच  
ग्राम पंचायत सेमलिया

यह मेरा और प्रतापगढ़वासियों का सौभाग्य है कि स्वराज संदेश सवांद यात्रा में सभी स्वराजियों का स्वागत सत्कार करने का अवसर मिला है और आपने गाँधी जी के स्वराज को जिया है। - शिव भगवन नागा, राजस्थान बाल आयोग



“ मैं एक किसान परिवार से हूँ। मैंने अपने कार्यकाल में अभी तक इतने प्रकार का बीज नहीं देखे हैं। जब मैं छोटा था तब मेरे पिताजी पुरी तरह से देशी पद्धति अपनाते हुए खेती करते थे। आज की बैठक के बाद मैं यह प्रण लेता हूँ कि अपने घर के उपयोग के लिए मैं पुरी तरह से परंपरागत खेती को अपनाऊँगा। ” रघुवीर चौहान शिक्षक



## सच्चा बचपन

### अन्तर्राष्ट्रीय बालिका दिवस

भला, क्यों मनाया जाता है यह दिवस

प्रत्येक वर्ष 11 अक्टूबर को मनाया जाने वाला अन्तर्राष्ट्रीय बालिका दिवस इसलिए मनाया जाता है ताकि-

- महिला/बालिका का सशक्तिकरण हो सके।
- उनको अपने अधिकार आसानी से मिल सकें।
- दुनिया भर में उनके सामने आने वाली चुनौतियों का वे सामना कर सकें।
- अपनी जरूरतों को पूरा कर सकें।
- दुनिया भर में लड़कियों के प्रति होने वाली लैंगिक असमानताओं को खत्म करने के बारे में जागरूकता फैल सके।

लिंगानुपात का यह अंतर देश, राज्य और जिले प्रत्येक स्तर पर देखा जा सकता है आखिर इसके कारण क्या हैं ?

पितृसत्तात्मक सामाजिक सोच- पुरुष प्रधान समाज में सत्ता, निर्णय लेने का अधिकार और सम्पत्ति का नियंत्रण पुरुष के पास होता है।

पुत्र प्राप्ति की प्रबल इच्छा

लिंग आधारित भेदभाव

लिंगानुपात या लिंग का अनुपात भी समझना जरूरी:- किसी क्षेत्र विशेष में पुरुष एवं स्त्री की संख्या के अनुपात को लिंगानुपात या लिंग का अनुपात कहते हैं। प्रायः किसी भौगोलिक क्षेत्र में प्रति हजार पुरुषों के मुकाबले स्त्रियों की संख्या को इसकी इकाई माना जाता है।

| क्र.सं. | राज्य और जिलेवार | लिंगानुपात -वर्ष में |      | तुलनात्मक बदलाव |
|---------|------------------|----------------------|------|-----------------|
|         |                  | 2011                 | 2001 |                 |
| 1       | राजस्थान         | 928                  | 921  | 7               |
| 1.1     | बांसवाड़ा        | 980                  | 973  | 7               |
| 1.2     | प्रतापगढ़        | 983                  | 969  | 14              |
| 1.3     | झुंझारपुर        | 994                  | 1022 | -28             |
| 2       | मध्यप्रदेश       | 931                  | 919  | 12              |
| 2.1     | रतलाम            | 971                  | 958  | -13             |
| 2.2     | झाबुआ            | 990                  | 980  | 10              |
| 3       | गुजरात           | 919                  | 920  | -1              |
| 3.1     | दाहोद            | 990                  | 985  | 5               |

#### आंकड़ों के अनुसार-

- ❖ राजस्थान, मध्य प्रदेश दोनों राज्यों में वर्ष 2001 की तुलना में वर्ष 2011 में लिंगानुपात बढ़ा है लेकिन अभी भी समानता के स्तर पर नहीं है।
- ❖ राज्य गुजरात में वर्ष 2001 की तुलना में वर्ष 2011 में लिंगानुपात कम हो गया।
- ❖ तीनों ही राज्यों के जिलों में वर्ष 2001 की तुलना में वर्ष 2011 में लिंगानुपात को बेहतर किये जाने की ज़रूरत है।
- ❖ राजस्थान के झुंझारपुर और मध्यप्रदेश के रतलाम के आंकड़ों में बड़ी गिरावट को देखा जा सकता है।

#### लिंगानुपात के स्तर को समान बनाने के लिए समाज और समुदाय की भूमिका:-

परिवार में बालक और बालिका के साथ किसी भी प्रकार का भेदभाव करने वाला व्यवहार ना रखें।

शिक्षा और पोषण के माध्यम से बालक और बालिका को शारीरिक, मानसिक विकास के अवसर मिलें। ताकि खुद, समाज और देश के निर्माण में सोच समझकर निर्णय लेने की भूमिका में आ सकें।

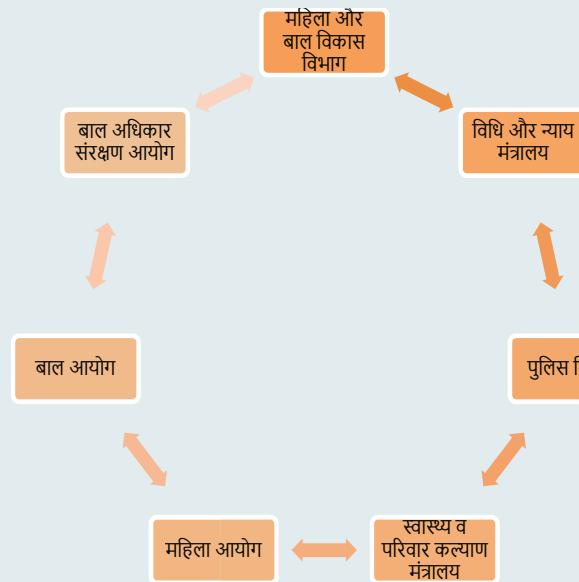
माता-पिता बच्चों के साथ कालिटी समय बिताएं ताकि उन्हें प्यार और सुरक्षा के अहसास के साथ ही यह भी लगता रहे कि वे आपके लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।

परिवार के छोटे-छोटे मसलों में उनकी राय लेते रहें और आपस में बातचीत करते हुए एक निर्णय पर पहुंचें।

बच्चों के साथ मिलकर उनके लिए फैसले लें और बच्चों की जिज्ञासाओं को शांत करने के पूरे प्रयास करें।

#### लिंगानुपात के स्तर को समान बनाने और बाल अधिकारों को सुरक्षा देने वाले विभिन्न विभागों की भूमिका:-

इन सभी विभागों को मिलकर और अपने-अपने स्तर पर समान ज़िम्मेदारी निभाते हुए कार्य किये जाने की आवश्यकता है



और इन सबके साथ ही बच्चों के अधिकारों को सुरक्षा देने वाले सभी नियम और कानूनों को सख्ती के साथ पालन करवाया जाना सरकार की ज़िम्मेदारी के अंतर्गत आता है।

## वर्षों बाद हुआ समस्याओं का त्वरित निराकरण ! चाइल्ड लाइन 1098 वाग्धारा की पहल लाई रंग

3. सरकार हमारी खेर-खबर नहीं लेती है कि खबर प्रकाशित होने पर जिला प्रशासन के अधिकारी तुरंत गाँव पहुंचें एवं ग्रामीणों से वार्तालाप कर संवाद किया ! कार्यवाही कर त्वरित निराकरण के लिए निर्देश ग्रामीणों में खुशी की लहर

2. चाइल्ड लाइन 1098 वाग्धारा ने चौपाल में निकली दिव्यांग पेंशन, पालनहार, शिक्षा से वंचित बालकों की समस्या, सड़क, पानी इत्यादि मुलभूत सुविधाओं का अभाव है तो जिला प्रशासन मदद करे



1. ग्रामीणों के द्वारा चाइल्ड लाइन 1098 की चौपाल में बताया कि कभी सरकार भी हमारे गाँव में आ के देखे कि हम किस स्थिति में अपने जीवन का गुजर बसर करते हैं। समस्याएँ अनेक हैं पर समाधान नहीं

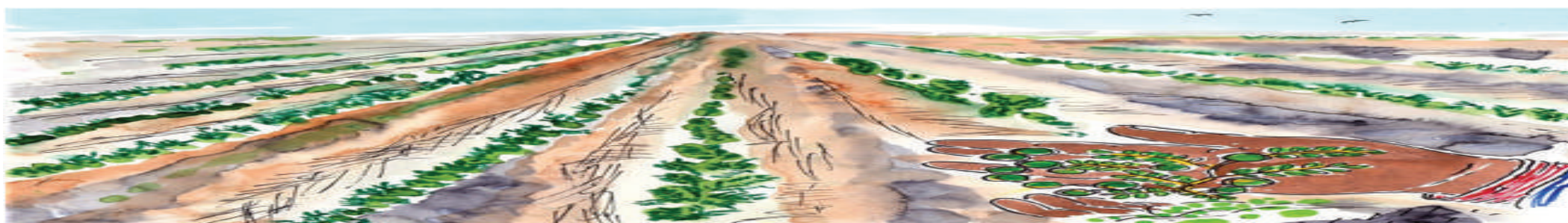


4. तत्काल पांच दिव्यांग जनों के प्रमाण पत्र बनवाए, ऑनलाइन पालनहार स्वीकृत पेंशन को जारी किया। ऑनलाइन माँ बाड़ी केंद्र के स्वीकृति के लिए भेजा।



5. गाँव निचला घंटाला में बरसों बाद अधिकारियों के गाँव पहुंचने एवं समस्त समस्याओं के निराकरण होने पर गाँव वालों ने चाइल्ड लाइन 1098 वाग्धारा का जताया आभार।

नोट :- जरूरत मंद बालको का एक ही सहारा चाइल्ड लाइन 1098 वाग्धारा



चने की फसल की बुवाई का समय



## जनजातिय स्वराज संगठन सहयोग इकाई की गतिविधियाँ

# माही

समुदाय के सभी भाई, बहनो, बच्चो एवं किसान  
भाइयो को मेरा राम राम,

माथियों एक बार पुनः हमारे पारम्परिक ल्योंहारे की शुरुआत करे हैं। हमने खुशी खुशी से नवरात्री का आयोजन किया था एवं दोफाल की पूँव तैयारी में हमारी माता -बहने घर की साफ़ -सफ़ाई एवं घर क अन्य कार्यों में व्यस्त रहेँगी एवं हमारे किसान भाई खी की खेतों में व्यस्त रहेँगे । एक बार फिर पुन परिवार साथ में मिलकर जयन की तैयारी करोगा और साथ ही अपनी खी फसल की तैयारी में व्यस्त, वाकई में एक सुन्दर माह की शुरुआत हुई । 02 अक्टूबर को ग्राम समभाओ का आयोजन होगा जिसमे प्रत्येक जौनकाई धारक परिवार जो की मनरेगा योजना के अंतर्गत 03 लाख तक के कालों का अनुमोदन करवाएगा जिन्हने विगत 03 सालों में किसी प्रकार का व्ययतिगत प्रस्ताव नहीं रखा हो. मेरा इस लेख के माध्यम से समुदाय को आग्रह है की गाँव में जो परिवार अभी भी इन योजनाओं से वंचित है उन्हें निश्चित ही जुड़ावे एवं योजना का लाभ गाँव के हर वंचित परिवार तक पहुंचावे।

साथियों इस बार हमने स्वराज सन्देश संवाद पदयात्रा का आयोजन किया था। आचार्य विनोबा भावे जी की जयंती 11 सितम्बर 2022 बौसवाड़ा में भागीजी की जयंती 02 अक्टूबर 2022 की जयपुर तक पदयात्रा के माध्यम से विभिन्न मार्गों से ले जानी थी जिसका मुख्य उद्देश्य जल, मिट्टी, बीज, वन, खाद्य एवं पोषण, वैचारिक एवं संस्कृतिक स्वराज का संवाद समुदाय के मध्य रखना एवं इस हेतु 02 अक्टूबर 2022 को मुख्यमंत्री महोदय के सामने स्वराज आग्रह सम्मेलन करना की किस प्रकार से इन सब ध्वकों को समुदाय के मध्य पुनर्जीवित किया जाए। हमारी इकाई 2022 में से 32 साथियों ने पूर्ण निष्ठा से अपनी भागीदारी निभाई।

कहा प्रबंधक गांधियों जब हमने यात्रा की शुरुआत की तो देखा की गाँधी जी का स्वरूप सही मायने में अभी भी हमारे जन्मजुलुब में बचा हुआ है चाहे वो जल, मिट्टी, बीज, वन, खाद्य एवं पोषण, वैचारिक एवं संस्कृतिक स्वरूप किसी भी रूप में है। इसका सबसे सफेद उदाहरण - मैंने देखा की वर्षा आते ही किसानाना बीज बीज के लिए बाजार पर पूर्ण निर्भर रहता है, मानो अगर किसी वर्ष बीज के बड़े बड़े ठेकेदारों ने बीज बनाना बंदकर दिया तब हमारा क्या होगा ...? निश्चय ही सोचनेवाला का विषय है बात अगर वन स्वरूप की करे तो आज की भी हमारे क्षेत्र में एक किसान परिवार के चर्चा 20से 25 पेड़ आसानी से मिल जाँएँ पर जब मैंने राष्ट्रिय फल आने के पेड़ को खोजने की कोशिश तो मुझे आम का पेड़ प्रतापगढ़ से आगे कही देखने को नहीं मिला ।

राष्ट्रायी फल आम का इस तरह विलुप्त होना, मिट्टी, बीज अभी भी हमने संजो रखी है हमारे पारंपरिक तरीको के कारण परन्तु सुदृढाय से चर्च हुई तो पता चला किसी किसी गाँव में तो पशु नहीं के बराबर है तो फिर हम वहलिया स्वरूप की कल्पना या बात कैसे करे हम और आगे बढ़े

तो देखा बहुत सी जमीन बंजर पड़ी हुई है , समुदाय और बच्चों के मध्य संवाद नहीं के बराबर है । विगत दो दशक में हमारे यहा भी कुछ ऐसा हो रहा है । भविष्य को ध्यान में रखते हुए आपसे अनुरोध है की हमारे वैचारिक एवं सांस्कृतिक स्वराज का संवाद युवा और बच्चों के मध्य में करेगे तो आने वाली पीढ़ी के लिए मुश्किलें नही होंगी ।

सहजकर्ता के अनुभव – परदाया के दौरान देखा कि समुदाय में पोषण बचीया सिर्फ और सिर्फ पीपलखुट्टू के तहत देवने के मिली। जैसे – जैसे यात्रा में अगर बढते गये तो देखा कि आज के दौर में लोग पैसो के पीछे भाग रहे है लेकिन वह अगर परिवार के स्वास्थ्य के लिए किसी प्रकार की जिम्मेदारी लेना ही नहीं चाहता । परपुलान नाम दूध प्राप्त कर बाजार में बेचने के लिए ही किया जा रहा है जिससे परिवार स्वयं दूध के बिना रहता है परन्तु इससे होने वाली आथ आथ में अपनी आवश्यकता के अनुसार दूध खान्य आर्ति भी पूरी नहीं कर पाता है क्योंकि इनको SIFS की समझ नहीं है अगर होती तो शायद वह क्रम टूटता नहीं और किसान को जल, मिट्टी,बीज,वन,खाद्य एवं पोषण खेतो से ही मिल जाता ।

स्मृत्युय के अनुभव –आज भी हमारा स्मृत्युय खेतों की हवाई बैनूँ से करता है , खेतों में देशी खाद- बीज का उपयोग करता है बाजार पर कम निर्भरता रखता है लेकिन जब हमने यात्रा के दौरान देखा की आज वहीं के किसानों के पास पशुधन नहीं के बराबर है अपने खाने के लिए खेतों में विभिन्न प्रकार की सब्जियाँ नहीं है युवा पीढ़ी को खेत किसान से अलगत नहीं करवाया पढ़ा-लिखा के इतना आगे बढ़ा दिया है कि उसको अब खेत किसान का काम पुनः दिया जाए तो वह शर्म के मारे ही कर सकता पहले की 03 पानी नंबर हुई है की जो फसल उत्पादन वहलें की भूमि पानी में मिलता था वो आज 07 पानी देने के पश्चात भी पूर्ण उत्पादन नहीं मिलता , पानी जमीन में 100 फीट तक नीचे चला गया अगर ये अनुभव हमने यात्रा के दौरान स्मृत्युय के साथ आपसी संबंध में नहीं मिलते तो शायद ये हमारे साथ आने वाले कुछ सालों में देखेंगे को मिलते पर अब ये सब देख कर हमारे गाँवों में स्वराज को जगाएँ और अन्य गाँवों में इसका सीधा सीधा संचार करें....

अंत में साधियों मेरा आप सब से निवेदन है कि शायद आज भी हमारा खेत में हमारे खेतों में केकड़ (अंड्रियू) देखने को मिलता है। वन बहुत ही किस्मत वाले हैं कि हमारे खेतों में अभी भी फसल उगाने की शक्ति बची हुई है और हमारी भूमि अभी भी स्वस्थ है। साधियों आप हम सब मिलकर एक बार पुनः स्वराज की स्थापना करें और हमारे जंग, मिट्टी, बीज, वन, खाद्य एवं पोषण, वैचारिक एवं संस्कृतिक स्वराज को साधियों तक हमारे आने वाले पीढ़ियों के लिए सरसज रखें। कितना कतलीफ उठाकर कमाते हैं,

जब गाँव से कम उम्र के बच्चे शहर जाते हैं...  
बस अब बाल श्रम नहीं



हि

# हिरण

पिछले 11 सितंबर 2022 को श्री विनोबा भावे जी के जन्मदिन के पंद्रह सवां संवादा पदयात्रा का आगाज जनजाति स्वराज के फेरे कूचा बाँसवाड़ा से जिला प्रमुख महोदय श्रीमती रेसमा मालवीया जी ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। इस पदयात्रा का उद्देश्य आदिवासी जन समुदाय की स्वराज से परिपूर्ण जीवन शैली एवं इसके लिए वाग्धारा द्वारा किये गए प्रयास को राजस्थान के अन्य जिलों में समुदाय के साथ साझा करना, साथ ही ही राजस्थान के समस्त किसानों के हकों के लिए विभिन्न मुद्दों जैसे जल स्वराज, बीज स्वराज, मिट्टी स्वराज, वैचारिक स्वराज, खाद्य एवं पोषण स्वराज, वैचारिक स्वराज आदि के संदर्भ को लेकर संवाद करना एवं उनके मुद्दों को आग्रह पत्र में शामिल कर उन्हें भी स्वराज संदेश संवाद यात्रा का भागीदार बनवाना, प्रकृति से मनुष्य के बीच में संवाद – मनुष्य से मनुष्य के बीच में संवाद, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में संवाद की बढ़ती खाई से स्वराज जीवन शैली में आई कमी की वजह से सदस्यता की शुरुआत की गई। यात्रा में इकाई प्रबंधक, क्षेत्रीय सहजकर्ता, सहजकर्ता, स्वराज मित्र, संगठन के सदस्य सभी शामिल हुए यात्रा के दौरान सभी साथियों के अनुभव कुछ इस प्रकार रहे हैं।

यात्रा 11 सितंबर 2022 को दिन में 11:00 बजे स्वराज केंद्र कुपुड़ा से श्री ज्येश ज्योशी जी के नेतृत्व में शुरू हुई जो काफी उत्साह पूर्ण रही रास्ते में लोगों द्वारा स्वागत कर यात्रियों को होसला बढ़ाया। पहले दिन की यात्रा लगभग 30 किलोमीटर की रही चुकी प्रथम दिन यात्रा दिन में शुरू की गई जिसकी वजह से शाम तक लोगों में काफी थकान महसूस हुई लेकिन सभी का जोश देखते ही बनता था।

दूसरे दिन जब यात्रा की शुरुआत सुबह प्रार्थना के साथ शुरू की गई जो उत्साह पूर्ण रही और जोश के साथ शुरू हुई और रास्ते में



## मानगढ़

मानगढ़ जनजातीय स्वराज संगठन सहयोग इकाई की ओर से सभी पाठकों को जयगुरु !

स्वराज के लिए जयपुर तक पदयात्रा...

हमारे आदिवासी समाज में लम्बे समय से चले आ रहे मुद्दों को प्रभावी तरीके से रखने व जल, जंगल, जमीन, जानवर, बीज, खाद्य और पोषण स्वराज, बाल अधिकार आदि से जुड़ी मांगों को नीतिनिर्माताओं तक पहुँचाने के उद्देश्य से राजस्थान, मध्यप्रदेश और गुजरात के सभी जनजातीय स्वराज संगठनों के नेतृत्व में वाघराज के सहयोग से स्वराज संवाद पदयात्रा का आयोजन किया गया।

पानोवा भावे जी की जयंती पर स्वराज संदेश लेकर स्वराजियो का जत्था बॉसवाड़ा से जयपुर के लिए पैदल यात्रा पर निकले... दिनांक 11 सितम्बर 2022 को गौरी दर्रा परमिट के जिला अध्यक्ष रमेश जी पंड्या और जिला प्रमुख रेशम मालवीया ने हमें हरी झंडी दिखा कर पदयात्रा को रवाना किया। इस अवसर पर वाघाड़ा संस्था के सचिव श्री जयेश जोशी ने पदयात्रा का उद्देश्य बताते हुए कहा कि गौरी जी की विचारधारा के अनुसरण में स्वराज को सही मायने में आदिवासी समुदाय ने अपनाया है और उस अनुसार ही अपना जीवन जीता है। सदियों से आज तक प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षण व संवर्द्धन आदिवासी समुदाय ने किया है तथा अपने जीवन को दूसरे समाज के लिए एक उदाहरण के रूप में रखें है। इन्हीं सच्ची और अच्छी पद्धतियों का आगे जाकर अन्य क्षेत्रों के समुदाय तक पहुँचाने की आवश्यकता है। पदयात्रा के दौरान कृषि विशेषज्ञ श्री पी.एल. पटेल के द्वारा बताया कि हमें किसान भाइयों को आत्मनिर्भर बनाना है पदयात्रा का यह एक अनमोल हिस्सा है क्योंकि आज किसान पीतयात्रा बाजार पर निर्भर हो गया है एवं खेती का पारंपरिक तरीकों को बहलता जा रहा है। हमारी यह यात्रा कई मायनों में आदिवासियों

सभी पद यात्रियों, स्वराजियों का जन समुदाय ने जो स्वागत और सम्मान किया उसको देखकर सभी को होसला मिला एवं उस सम्मान को देखकर सभी स्वराजियों ने नया उत्साह का संवाहक हुआ इस प्रकार शुरू के 2 दिन थोड़ी शारीरिक कष्ट का अनुभव हुआ परन्तु दिमागी रूप से सभी चुस्त – दुरुस्त थे। बुद्धिमान स्वराजियों की टोली जवानों को नहीं थकने की प्रेरणा देती रही। महिला स्वराजी समूह के जोश को देख सभी स्वराजियों में जोश आया। गाते, नाचते, नारे पे नारा लगाते सभी स्वराजी अपनी मंजिल के लिए आगे बढ़ते रहे। सभी बिना किसी भेद-भाव एक साथ सोये, जहाँ जैसी सुविधा उपलब्ध हुई उसी के अनुसार नित्य क्रिया कर चुने। मंजिल की ओर चढ़ दिए। फिर धीरे-धीरे सभी के चलने ठहरने का एक गतिशील समय बनता गया, रोज 25 से 30 किलोमीटर चलना, रास्ते में आने वाले गाँवों में समुदाय के साथ, विद्यालय में बच्चों एवं अध्यापकों के साथ, समान विचारधारा वाले संस्थाओं के साथ, हमारी विचार धारा में विश्वास रखने वाले व्यक्तिगत एवं जनसमुदाय के साथ वैचारिक संवाद हुआ, विचारों का आदान-प्रदान हुआ, समस्याएं निकली साथ ही समाधान पर चर्चा हुई और एक सुनहरे भविष्य की परिकल्पनाओं के विदा लेकर आगे बढ़े। सभी का एक नियमित समय हो गया जो सप्ताह यात्रा को आसान बनाता गया यात्रा जैसे-जैसे आगे बढ़ती गई और रास्ते में गाँव, फले, ढाणियाँ, जिले, उपखंड आते गए और वहाँ के समुदाय के साथ आपस में संवाद और बीज यात्रा के उद्देश्यों के बारे में चर्चा होती गई। वहाँ के बीज और उनके खेती करने के तरीकों के बारे में और आदिवासी समुदाय की खेती करने के तरीके बारे में आपस में संवाद होने लगा, जैसे-जैसे जयपुर पास आता गया वहाँ खाद्य विविधता कम मिली, लोगों की बाजार पर निर्भरता ज्यादा दिखी और पदयात्रियों

के अधिकारों को लेकर है कि हम किस प्रकार से खेती की परम्परागत प्रणालियों को अपनायें।

2 अक्टूबर 2022 को गाँधी जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत, राजस्थान सरकार को ज्ञापन प्रस्तुत किया गया।

हमारे गाँव में बनी ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समितियाँ, सक्षम समूह और जनजातीय स्त्राज संगठनों की सक्रियता के स्तर को आंकलन करने का भी अकुम्भक माह है जिसमें समूहमूल्यांकन की प्रक्रिया को अपनाते हुए संगठन के सदस्य स्वयं के संगठन का मूल्यांकन करते, पिछले छह माह में संगठन की बैठकों में की गई सभागतिमा मुद्दों के प्रति सक्रियता और किये गए प्रयासों का मूल्यांकन कर प्राप्त परिणामों के आधार पर संगठन को और अधिक मजबूत बनाने के लिए चर्चा व कार्य योजना निर्मित करेंगे।

सच्चा बचपन: बच्चों में पोषण के स्तर को जाँचने के लिए वाधारा संस्था के द्वारा नरिशिंग स्कूल फाउंडेशन के साथ मिलकर गांगडालाई और आनंदपुरी के 1200 विद्यालयीन बच्चों को स्वास्थ्य प्रिक्षण कर पोषण के स्तर को नापा गया. साथ ही सर्वे के माध्यम से छात्रों की शिक्षा का स्तर, पोषण की स्थिति, स्वास्थ्य, मध्याह्न भोजन की गुणवत्ता आदि से सम्बंधित प्रश्न पूछे गए इसमें स्कूल के 9 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों को सर्वे किया गया।

[illegible]

का स्वागत सम्मान भी समुदाय के द्वारा जैसे-जैसे यात्रा आगे बढ़ती गई होता गया जिससे यह पता ही नहीं चला की 22 दिन की यात्रा पूर्ण हो गई मानो ऐसा लगा रहा था कि यात्रा आज ही शुरू की गई । यात्रा के शुरुआती दौर में सभी यह समझ रहे थे की प्रयागपूर के बाद हम को एक पहाचनेगा, भाषा अलग है, कैसे बात करेंगे, हम जनजातीय बाहुल्य क्षेत्र से जा रहे हैं वहीं जनजाति समुदाय न के बराबर है लोगों का रश्मन हमारी तरफ से कैसा रहेगा आदि शंका थी परन्तु जैसे ही प्रतापगढ़ जिला पाया गया, वहां के स्थानीय लोगों ने जनप्रतिनिधियों ने जगह - जगह कर कर साफा, माला, अल्ट्राहा, फूल आहार, पानी, चाय आदि से स्वागत किया एवं यात्रा को अपना समर्थन दिया। नितीड़ागढ़, भीमवाड़ा, अजमेर, टोंक, जयपुर जिले में प्रवेश करने के दौरान लोगों से सम्पर्क गहरा हो गए तब समझ आया की यात्रा क्यों महत्वपूर्ण है ।

जयपुर हम सब 1.11.2022 को पहुँच गए और जिस उद्देश्य के लिए यह पदयात्रा शुरू की गई जिसमें समुदाय के साथ चुर्चुरा आवाज़ों की समुदायी की जो मांगें लेकर निकले थे वह अब पूर्ण राजस्थान की मांग बन गई थी और मानो ऐसा लग रहा था कि जिस उद्देश्य से हम यात्रा लेकर गये हैं वह पूर्ण हो जायागी 02 अक्टूबर, 2022 को गांधी जी की जन्म जयंती के अवसर पर गांधीजी की सभी स्वराजियों द्वारा माल्यापत्र किया गया उसके बाद माननीय मुख्यमंत्री महोदय के व्यक्तिगत मिलन, वार्ता एवं आग्रह पर आग्रह पत्र सौंपा गया। दुसरे दिन संसद प्रतिनिधिमंडल द्वारा महामहिम राज्यपाल महोदय यात्रा संवाद के साथ आग्रह पत्र सौंपने के साथ यात्रा के उद्देश्यों की प्राप्ति हुई। यह पल सभी स्वराजियों के लिए गर्व का पल रहा। अब लतात है यह यात्रा का अंतिम पड़ाव नहीं है यह तो बस शुरुआत है अभी और जाना है। धन्यवाद

7 सितंबर से 17 सितंबर 2022 तक आजीविका एवं उद्यम विकास कार्यक्रम (एलएडीपी) के तहत आयोजित किया गया।

उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम में जिला महाप्रबंधक नाराई श्री विश्राम मीना, वाधवा संस्था के कृषि एवं पशुपन विशेषज्ञ श्री पी.एल. पटेल, मानगढ इकाई प्रबंधक प्रशांत थोरात, वाडी परियोजना कार्यक्रम अधिकारी प्रहलाद गणपत, क्षेत्रीय सहजकर्ता विकास मेश्राम और सहजकर्ता कान्ता डामोर, सुरेश पटेल, उषा देवी के सान्निध्य में किया गया।

आजीविका एवं उद्यम विकास कार्यक्रम के शुभारंभ के अवसर पर जिला महामन्धक नबाई विश्राम मीना ने कहा कि स्वयं सहायता समूह भी राष्ट्र विकास में अहम भूमिका अदा कर रहे हैं और आजीविका विकास कार्यक्रम के अंगत ग्रामीण महिलाएँ प्रशिक्षण लेकर स्वयं को स्वावलंबी बनाकर परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत कर पाती हैं। उन्होंने बताया कि महिलाओं में हुनर को कोई कमी नहीं है लेकिन सही मार्गदर्शन न होने के कारण हुनर दबकर रह जाता है। उक्त कार्यक्रम का उद्देश्य महिलाओं के भीतर छिपे कौशल को विकसित कर आत्मविश्वास का संचार करना है, ताकि उन्हें उद्यमिता के माध्यम से आत्मनिर्भरता की दिशा में उन्मुख किया जा सके। कृषि एवं पोषण विशेषज्ञ पी.एल. पटेल ने बताया कि बाजारिकरण से हमारी परंपरिक वीज पद्धति विलुप्त हो रही है उसको बचाने और बाजारी निर्भरता को कम करने के लिए यह प्रशिक्षण बहुत महत्वपूर्ण है वीज उद्योग के बारे में बताते हुए हमारे जीवन में वीज क्या है और उसको महत्व को समझाया गया। मानानंद झाई प्रबंधक प्रस्ताव थोपते नहे सामुदायिक वीज प्रबंधन में स्वयं सहायता समूह और स्वराज संगठन की भूमिका, आजीविका संघर्धन के विभिन्न प्रविधियाँ, वीज संरक्षण के तकनीकी पक्ष, वीज उपचार, वीज अकुरण, वीज संग्रहण आदि की तकनीकी जानकारी प्रदान की।



हरी पत्तियों,  
सूखे पत्तों  
और गाय के  
गोबर से लेकर  
कम्पोस्टिंग  
शुरू करने का  
अच्छा समय  
है — ताकि रबी  
सीजन के लिए  
खाद तैयार हो  
सके।



